CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आलेख

Received 19.01.2023 Reviewed 22.01.2023 Accepted 30.01.2023

कालिदास के साहित्य में प्रकृति प्रेम एवं संरक्षण

* डॉ बी एल श्रीमाली

प्रस्तावना

प्राचीन काल में वैश्विक पटल पर भारत की पहचान 'विश्वगुरु' के रूप में थी। यह पहचान हमारे देश में उपलब्ध ज्ञान निधि के कारण थी। हमारे देश का विशाल साहित्य और उसमें निहित ज्ञान राशि सम्पूर्ण विश्व को मार्गदर्शन प्रदान करती थी। वैदिक साहित्य विश्व का प्राचीनतम एवं विशालतम साहित्य है।वैदिक साहित्य के पश्चात् भारत में लौकिक साहित्य वैदिक साहित्य की विशाल ज्ञान परम्परा को अक्षुण्ण रखा। लौकिक संस्कृत साहित्यकारों में महाकवि कालिदास का प्रमुख स्थान है। महाकवि कालिदास ने संस्कृत साहित्य को अपना विशिष्ट योगदान प्रदान किया है।

कालिदास प्रकृति प्रेमी कवि थे, उनके साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं जिनमें मानव का अगाध प्रकृति प्रेम एवं प्रकृति संरक्षण दृष्टिगोचर होता है। इनके साहित्य में प्रकृति एवं जड़ पदार्थों का मानवीकरण बड़े ही सुंदर ढंग से हुआ है। पशु–पक्षी एवं तपोवन के वृक्ष–लता भी मानवीय वेदनाओं के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। मानव का प्रकृति के प्रति प्रेम एवं संरक्षण अनुकरणीय है। मानव का प्रकृति के प्रति प्रेम एवं संरक्षण सहोदर के समान दृष्टिगोचर हो रहा है। शकुन्तला छोटे–छोट पौधों को बड़े मनोयोगऔर उत्साहपूर्वक सींचती है क्योंकि उसका उनके प्रति भाई के समान प्रेम है। शकुन्तला पहले वन के पेड़–पौधों और लताओं को पानी पिलाती है तत्पश्चात् वह स्वयं पानी पीती है। वह अपने आपको अलंकृत करने के लिए वृक्ष के पत्तों और फूलों को कभी नहीं तोड़ती है।

कालिदास के साहित्य में प्रकृति प्रेम एवं संरक्षण निम्नानुसार दृष्टिगोचर होता है–

(1) **पारिवारिक संबंध –** अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति के साथ मानव का मानवीय संबंध दिखाई देता है, जैसे शकुन्तला कहती है

''अस्ति मे सोदरस्नेह एतेषु।''

अर्थात् इन वृक्षों के प्रति मेरा सहोदर (भाई) के समान प्रेम है। शकुन्तला ससुराल जाते समय अपने पिता से विदाई लेते हुए कहती है–

''तात! लताभगिनी वनज्योत्स्नां मन्त्रयिष्यसे।''

अर्थात् हे पिताजी! मैं (शकुन्तला) लता बहिन वन ज्योत्स्ना से विदाई लूँगी।

शकुन्तला के उपर्युक्त कथन के प्रति कण्व ऋषि कहते हैं–

''अवैमि ते तस्यां सौदर्यस्नेहम्।''

अर्थात् मैं उसमें (वन ज्योत्स्ना में) तुम्हारे सहोदर बहिन के प्रेम को जानता हूँ।

शकुन्तला के ससुराल जाते समय कण्व ऋषि कहते हैं कि हे तपोवन के वृक्षों! तुम्हारे साथ रहने वाली शकुन्तला को आज तुम्हारे द्वारा अनुमति दी जानी चाहिए। इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए कण्व ऋषि कहते हैं–

''अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।''

अर्थात् इस शकुन्तला को वनवास के बंधु वृक्षों द्वारा पति के घर अर्थात् ससुराल जाने की अनुमति दे दी गई है, अर्थात् शकुन्तला जब ससुराल जाती है उस समय आश्रम के वृक्ष शकुन्तला को ससुराल जाने की अनुमति एवं उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

शकुन्तला जब ससुराल जाती है तब शकुन्तला के साथ रहने वाली मृगी (मृग की पत्नी) के गर्भ का समय पूरा होने वाला है, अतः वह (शकुन्तला) मृगी के विषय में अपने पिता से कहती है–

''तात! एषोटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूर्यदानघप्रसवा भवति तदा मह्यं कमपि प्रियनिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ।''

अर्थात् हे तात! यह पर्णकुटी के आस–पास विचरण करने वाली, गर्भ के कारण धीरे–धीरे चलने वाली यह मृग की पत्नी (मृगी) जब बिना कष्ट के प्रसव वाली हो जाए तब मेरे पास किसी भी प्रिय समाचार देने वाले को अवश्य भेजना।

(2) **मानव सदृश व्यवहार** –कालिदास के साहित्य में मानव द्वारा प्रकृति के प्रति भी मानव जैसा व्यवहार दृष्टिगोचर होता है, जब शकुन्तला ससुराल जा रही है तब वह (शकुन्तला) लता को कहती है–

''वन ज्योत्स्ने, चूतसंगतापि मां प्रत्यालिंगेतोगताभिः शाखा बहुभिः।

अद्यप्रभृति दूरवर्तिनी भविष्यामि।''

अर्थात् हे वन ज्योत्स्ने! आम्रवृक्ष से मिली हुई भी तुम इधर फैली हुई शाखा रुपी भुजाओं से मेरा आलिंगन करो क्योंकि आज से मैं तुमसे दूर रहने वाली हो जाऊँगी।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में दुष्यन्त पुत्र सर्वदमन शेर (सिंह) के साथ खेलते हुए शेर के दाँतों को गिनने का प्रयास करता है और कहता है कि–

''जृम्भस्व सिंह, दन्तांस्ते गणयिष्ये।''

अर्थात् हे शेर! जम्भाई ले, तेरे दाँतों को मैं गिनूँगा।

(3) **आत्मीयता का संबंध** – कालिदास के साहित्य में मानव का प्रकृति के प्रति आत्मीयता का संबंध दृष्टिगोचर होता है। शकुन्तला के ससुराल जाने के अवसर पर प्रकृति की साहचर्य की भावना की सुकुमारताएवं प्रकृति के साथ आत्मीय प्रगाढ़ता का दृष्टान्त निम्नानुसार दिखाई देता है–

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या,

नादते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।

आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः,

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वेरनुज्ञायताम्।।

अर्थात् जो शकुन्तला तुम्हारे (वृक्षों के) जल सिंचित न होने पर स्वयं पहले पानी नहीं पीती थी, अलंकरण प्रिय होने पर भी जो शकुन्तला तुम्हारे प्रति प्रेम के कारण तुम्हारे नवीन पत्तों को नहीं तोड़ती थी। तुम्हारे सर्वप्रथम पुष्पोत्पति के समय उत्सव मनाती थी, वह यह शकुन्तला अपने पति के घर (ससुराल) जा रही है; तुम सभी (तपोवन के वृक्षों) द्वारा स्वीकृति दी जानी चाहिए।

शकुन्तला के ससुराल जाने पर वहाँ के (आश्रम के) पेड़–पौधों एवं पशु–पक्षियों की जो स्थिति हुई है वह निम्नानुसार है–

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपत्रा मुंचन्त्यश्रूणीव लताः।।

अर्थात् शकुन्तला के ससुराल जाने से आश्रम की हरिणियों ने दर्भ के ग्रास खाना छोड़ दिया है, मोरों ने नाचना छोड़ दिया है, आश्रम की लताओं ने आँसुओं के रुप में पत्ते गिराना चालू कर दिया है अर्थात् लताएँ पत्तों के रुप में आँसू गिरा रही है।

शकुन्तला के ससुराल जाते समय आश्रम का मृग भी थोड़े से साथ चला जाता है जब शकुन्तला उस मृग को कहती है–

''वत्स, किं सहवास परित्यागिनी मामनुसरसि।

इदानीं मया विरहितं त्वां तातचिन्तयिष्यति! निवर्तयस्व तावत्।''

अर्थात् हे वत्स! साथ छोड़ देने वाली मेरा अनुसरण क्यों कर रहे हो? इस समय मेरे द्वारा वियुक्त हुए तुम्हारे विषय में तात चिन्ता करेंगे। अतः लौट जाओ।

(4) **संतान से भी प्रिय प्रकृति –** कालिदास के साहित्य में प्रकृति को संतान से भी प्रिय दर्शाया गया है–

शकुन्तला अपनी दो सखियों (अनुसूया और प्रियंवदा) के साथ पेड़–पौधों को पानी पिला रही है तब शकुन्तला की सखी अनुसूया कहती है–

''हला शकुन्तले! त्वतोऽपि तातकाश्यपस्याश्रमवृक्षकाः प्रियतरा।

येन नवमालिकाकुसुमपेलवा त्वमप्येतेषामालवाल पूरणे नियुक्ता।।''

अर्थात् हे शकुन्तला! पिता काश्यप को आश्रम के ये छोटे–छोटे वृक्ष तुमसे भी अधिक प्रिय हैं इस नवमालिका के पुष्प के समान कोमल होते हुए भी तुमको इन वृक्षों के घेरों को जल से भरने के लिए लगाया है।

राजा दुष्यन्त का पुत्र सर्वदमन सिंह (शेर) के साथ खेल रहा था और वह (सर्वदमन) शेर के दाँत गिनने का प्रयास करता है तब आश्रम की तपस्वी स्त्री (सुव्रता) कहती है–

''अविनीत, किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्वानि विप्रकरोषि।''

अर्थात् हे घृष्ट! हमारे संतान से अभिन्न, अर्थात् पुत्र तुल्य प्राणियों को क्यों पीड़ित कर रहे हो?

इस उदाहरण में बालक शेर के बच्चे के साथ खेलते हुए शेर के बच्चे को परेशान सा कर रहा है। अतः यह तापसी स्त्री सहन नहीं कर सकी। फलस्वरुप वह क्रोध करने लगी है और यह क्रोध उसी प्रकार कर रही है जिस प्रकार किसी माता के पुत्र को कोई परेशान कर रहा हो, और माता परेशान करने वाले के प्रति क्रोध करे।

(5) **मानव और प्रकृति एक दूसरे के सहयोगी –** कालिदास के साहित्यमें मानव और प्रकृति को एक दूसरे के सहायक, पोषक एवं संरक्षक के रुप में दर्शाया गया है। जैसे शकुन्तला और उसकी दो सखियाँ पेड़–पौधों को पानी पिला रही है–

''एतास्तपस्वीकन्यकाः स्वप्रमाणानुरुपैः सैचनघटैर्बालपादपेभ्यः पयो दातुमित एवाभिवर्तन्ते।''

अर्थात् ये तपस्वी कन्याएँ अपनी–अपनी शक्ति के अनुरुप सींचने वाले घड़ों से छोटे पौधों को पानी देने के लिए इधर ही आ रही हैं। यहाँ पर शकुन्तला और उसकी दोनों सखियों को प्रकृति के सहयोगी के रुप में दर्शाया गया है।

(6) **प्रकृति संरक्षण –** कालिदास के साहित्य में शकुन्तला एवं उसकी दो सखियाँ पेड़–पौधों को पानी पिला रही है, उसकी थकान से शकुन्तला की जो स्थिति हुई है उसका विवेचन राजा दुष्यन्त कर रहे हैं–

''भद्रे, वृक्षसेचनादेव परिश्रान्तामत्रभवतीं लक्षये।''

अर्थात् भद्रे, मैं इसको (शकुन्तला को) वृक्ष के सींचने से ही थकी हुई देखता हूँ।

यहाँ पर शकुन्तला एवं उसकी सखियों को पेड़–पौधों को पानी पिलाते हुए दर्शाया गया है जो कि वन संरक्षण का मुख्य अंग है।

राजा दृष्यन्त के उद्यान की रक्षिका आम्रमंजरी को तोड़ने लगती है तो राजा के अन्तःपुर का वृद्ध सेवक कंचुकी को कहता है–

''त्वमाम्रकलिका भगं किमारभसे?''

अर्थात् तुम आम्रमंजरी को तोड़ना क्यों प्रारंभ कर रही हो? यहाँ पर प्रकृति संरक्षण दिखाई दे रहा है, परंतु आम्रमंजरी तोड़ने के लिए मना किया जा रहा है।

(7) **जैव संरक्षण –** कालिदास के साहित्य में प्रकृति प्रेम एवं संरक्षण के साथ जीवों पर प्रेम एवं उनका संरक्षण भी दृष्टिगोचर होता है। राजा दुष्यन्त अपने रथ के सारथी के साथ आश्रम में प्रवेश करते हैं और वहाँ एक मृग को देखते हैं और कहते हैं–

''आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।''

अर्थात् यह आश्रम का मृग है नहीं मारना चाहिए नहीं मारना चाहिए।

इस पंक्ति से यह ध्वनित हो रहा है कि पशुओं को पालना चाहिए और जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए उनकी रक्षा करनी चाहिए।

उपर्युक्त पंक्ति के उत्तर में राजा के रथ का सारथी राजा को कहता है–

''कृष्णसारस्यान्तरे तपस्विन उपस्थिताः।''

अर्थात् कृष्ण सार नामक मृग के बीच तपस्वी उपस्थित हैं, इस उपर्युक्त पंक्ति में भी जैव संरक्षण लक्षित होता है क्योंकि जैव संरक्षण है तभी आश्रम में मृग का होना दिखाई दे रहा है, अतः जैव संरक्षण किया जाना चाहिए।

प्राणियों की रक्षा के लिए राजा दुष्यन्त कहता है–

''भो भोस्तपस्विनः संनिहितास्तपोवन सत्वरक्षायै भवत।''

अर्थात् हे तपस्वियों, तपोवन के प्राणियों की रक्षा के लिए तैयार हो जाओ। यहाँ जैव संरक्षण दिखाई दे रहा है।

शकुन्तला की सखी प्रियंवदा एवं अनुसूया शकुन्तला से कहती है–

''एष दत्तदृष्टिरूत्सको मृगपोतको मातरमन्विष्यति। एहि। संयोजयाव एनम्।''

अर्थात् यह हरिण का बच्चा इधर दृष्टि डालते हुए अपनी माता को खोज रहा है। आओ हम दोनों इसको अपनी माता से मिला देते हैं।

शकुन्तला के ससुराल जाते समय शकुन्तला द्वारा पोषित मृग का बच्चा शकुन्तला के वस्त्र को पकड़ता है, तब कण्व ऋषि कहते हैं–

''यस्य त्वया व्रणविरोपणमिंगुदीनां

तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।

श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति,

सोऽयं न पुत्र कृतकः पदवीं मृगस्ते।।

अर्थात् हे पुत्री! तुमने जिस मृग के कुशा के अग्र भाग से क्षत मुख में घाव को भरने वाला इंगुदी के तेल को लगाया था वह यह श्यामाक नामक धान्य विशेषों की मुठ्ठी परिमित ग्रासों से पाला हुआ कृतक पुत्र तुम्हारे मार्ग को नहीं छोड़ रहा है।

यहाँ पर मृग के मुख में घाव को भरने के लिए इंगुदी तेल का लगाया जाना जैव संरक्षण का दृष्टान्त है।

महाकवि कालिदास मानव–सौंदर्य की तीव्रता तथा यथार्थता के अभिव्यंजन के निमित्त प्रकृति का आश्रय लेते हैं। वह प्रकृति और मानव के बीच परस्पर प्रगाढ़ मैत्री, सहज सहानुभूति तथा रमणीय रागात्मक वृति का संबंध जोड़ते हैं। कालिदास के साहित्य के अध्ययन से यह अनुभव होता है कि कवि स्वयं ने जाकर चर्चित प्राकृतिक स्थलों एवं उसकी दशाओं को ध्यान से देखा एवं अनुभव किया है। उनके साहित्य में प्रकृति के विशुद्ध आलम्बन रुप, आलंकारिक रुप, उद्दीपन रुप एवं संवेदनशील युक्त रुप दृष्टिगोचर होते हैं। निःसंदेह कालिदास प्रकृति के अन्तःस्थल के सूक्ष्म पारखी महाकवि हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय,बलदेव(1986). *संस्कृत साहित्य का इतिहास,* वाराणसी : शारदा मंदिर।
2. मिश्रा, रामचन्द्र (1992). *काव्यादर्श,* वाराणसी : चौखम्भा विद्याभवन।
3. राजपूत, जे.एस. एवं अन्य (2001). *विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में अनुभव,* नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्।
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005,* नई दिल्ली।
5. पांडेय,चन्द्र शेखर (1988). *संस्कृत साहित्य की रूपरेखा.* कानपुर : साहित्य निकेतन।
6. विद्यालंकार,निरूपण (1995). *महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् ,*मेरठ : साहित्य भण्डार।

Corresponding Author
*** डॉ बी एल श्रीमाली**
सह–आचार्य (शिक्षा)
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय), उदयपुर (राज.)
Email - shrimalibl@gmail.com, Mob. 9460693771